

## राजस्थान में वशिव का पहला 'ॐ' आकार का मंदिर

### चर्चा में क्यों?

राजस्थान के पाली ज़िले में पवतिर प्रतीक 'ॐ' के आकार का एक सुंदर मंदिर वर्तमान में नरिमाणाधीन है। इस प्रतष्ठिति रूप में डज़ाइन किया गया यह वशिव का पहला मंदिर होगा।

### मुख्य बदि:

- 'ॐ आकार' मंदिर के नाम से मशहूर यह स्मारकीय संरचना पाली ज़िले के जादान गाँव में नागर शैली में 250 एकड़ के विशाल वस्तितार में फैली हुई है।
- सूत्रों के अनुसार यह महत्त्वपूर्ण कार्य वर्ष 1995 में मंदिर की आधारशिला रखने के साथ शुरू हुआ था, जिसके वर्ष 2023-24 तक पूरा होने की उम्मीद जताई गई थी।
  - यह अपने पवतिर परसिर में भगवान महादेव की 1,008 मूरतियों और 12 ज्योतरिलगिों को रखने में सक्षम होगा।
  - 135 फीट की ऊँचाई पर स्थति यह मंदिर 2,000 स्तंभों के सहारे खड़ा है, इसके परसिर में 108 कमरों की व्यवस्था की गई है।
  - मंदिर परसिर की केंद्रीय विशेषता गुरु माधवानंद जी की समाधि है।
  - मंदिर के सबसे ऊपरी खंड में एक गर्भगृह है जो धौलपुर की बंसी पहाड़ी से प्राप्त स्फटकि से नरिमति शविलगि से सुशोभति है।
- इस भव्य परयोजना के पीछे दूरदर्शी ओम आश्रम के संस्थापक वशिव गुरु महामंडलेश्वर परमहंस स्वामी महेश्वर नंद पुरीजी महाराज हैं।
- हद्वि धरम में ॐ मंत्र का अत्यधिक महत्त्व है क्योंकि अनुयायियों द्वारा प्रतदिनि प्रातःकाल इस महामंत्र का जाप किया जाता है।



//

## नागर शैली का मंदिर

- उत्तर भारत में यह आम बात है कि पूरा मंदिर एक पत्थर के चबूतरे पर बनाया जाता है और ऊपर तक जाने के लिये सीढ़ियाँ होती हैं।
- इसके अलावा, दक्षिण भारत के विपरीत इसमें सामान्यतः वसित सीमा दीवारें या प्रवेश द्वार नहीं होते हैं।
- जबकि शुरुआती मंदिरों में सिर्फ एक टावर या शिखर होता था, बाद के मंदिरों में कई टावर या शिखर होते थे।
- गर्भगृह हमेशा सबसे ऊँचे टावर के ठीक नीचे स्थित होता है।
- शिखर के आकार के आधार पर नागर मंदिरों के कई उपविभाग हैं।
- भारत के विभिन्न हिस्सों में मंदिर के विभिन्न हिस्सों के अलग-अलग नाम हैं; हालाँकि साधारण शिखर का नाम जो आधार पर वर्गाकार होता है और जिसकी दीवारें शीर्ष पर एक बट्टि तक अंदर की ओर होती हैं, उसे 'लैटिना' या रेखा-प्रसाद प्रकार का शिकारा कहा जाता है।
- नागरा क्रम में वास्तुशिल्प का दूसरा प्रमुख प्रकार फमसाना है, जो लैटिना की तुलना में व्यापक और छोटा होता है।
- उनकी छतें कई स्तरों से बनी होती हैं जो धीरे-धीरे इमारत के केंद्र पर एक बट्टि तक उठती हैं, लैटिना छतों के विपरीत जो तेज़ी से बढ़ते ऊँचे टावरों की तरह दिखती हैं।
- नागर भवन के तीसरे मुख्य उप-प्रकार को सामान्यतः वल्लभी प्रकार कहा जाता है।
- ये आयताकार इमारतें हैं जिनकी छत एक गुंबददार कक्ष में उठी हुई है।